दृष्टि The Vision

drishti

ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	DTVF/19(JS)–ESY-**E2**	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

Name: Bhoor Singh meena **Mobile Number:**

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** AwAke-19/K-24

Center & Date: Mukharji Nagar 7-08-2019 **UPSC Roll No.** ***(If allotted)*****:** 3811578

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड A और B प्रत्येक में से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: **125 × 2 = 250**

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: **125 × 2 = 250**

खंड–A / SECTION –A

1. तन के भूगोल से परे एक स्त्री के मन की गाँठें खोलकर कभी पढ़ा है तुमने।

   Have you ever looked beyond a woman's body to understand the complexities of her mind.

2. अंतरिक्ष पर शोध : निरर्थक प्रयास या अवसरों का पुंज।

   Space research : Futile efforts or a beam of opportunities.

3. प्रकृति की अनदेखी विनाश का आमंत्रण-पत्र है।

   Ignorance towards nature is an invitation to catastrophe.

4. समावेशी विकास संभव है, बशर्ते प्रतिस्पर्द्धा संघर्ष न बने।

   Inclusive development is possible, provided that competitions do not become a struggle.

खंड–B / SECTION –B

1. युद्ध के लिये तैयार रहना शांति को संरक्षित करने का सबसे प्रभावी उपाय है।

   To be prepared for war is the most effective means of preserving peace.

2. समस्याग्रस्त विश्व के लिये गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता।

   The relevance of Gandhian Ideology in the problem laden world.

3. सामाजिक एवं क्षेत्रीय न्याय की कमज़ोरियाँ संपन्न समाजों के अंतर्विरोधों को प्रत्यक्ष संघर्ष के रूप में प्रस्तुत कर सकती हैं।

   The weaknesses in social and regional justice can bring forward contradictions of affluent societies in form of direct struggle.

4. नैतिकता स्वयं अपना ही पुरस्कार है।

   Morality is its own reward.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION –A

1. तन के भूगोल से परे एक स्त्री के मन की गाँठें खोलकर कभी पढ़ा है तुमने।

   Have you ever looked beyond a woman's body to understand the complexities of her mind.

2. अंतरिक्ष पर शोध : निरर्थक प्रयास या अवसरों का पुंज।

   Space research : Futile efforts or a beam of opportunities.

3. प्रकृति की अनदेखी विनाश का आमंत्रण-पत्र है।

   Ignorance towards nature is an invitation to catastrophe.

4. समावेशी विकास संभव है, बशर्ते प्रतिस्पर्द्धा संघर्ष न बने।

   Inclusive development is possible, provided that competitions do not become a struggle.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

"प्रकृति की अनदेखी विनाश का आमंत्रण पत्र है।"

महान पर्यावरणविद्
उपर्युक्त कथन ~~[illegible]~~ द्वारा मानव द्वारा निरन्तर की जारही प्रकृति के अनदेखी के संदर्भ में एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन में कहा। जिसमें उसने प्रकृति के प्रति मानवीय दृष्टिकोण के बारे में चिंता जाहिर की। प्रकृति अर्थात सृष्टि जिसमें मानव, जीव जन्तु, पेड़-पौधे, जैविक और अजैविक तत्व के साथ-साथ सम्पूर्ण पर्यावरण को शामिल किया जाता है। प्रकृति की प्रत्येक वस्तु पर सभी का समान अधिकार है, चाहे वह मानव हो या कोई अन्य जीव। परन्तु मानव प्रकृति का सबसे महत्वपूर्ण जीव है क्योंकि वह विवेकशील है। मानव इसी विवेकशील के कारण अपना सम्पूर्ण विकास करना चाहता है, और इसी विकास क्रम मे वह इस हद तक खो जाता है इसे अपनी माँ समान प्रकृति पर कोई ध्यान नही देता और निरन्तर उसका ऋणी होता चला जाता है, परन्तु उसकी बढ़ती तृष्णा, उसका बढ़ता भौतिकतावादी रुझान प्रकृति को अपने विनाशक या भयानक रुप में आना पड़ता है जिसकी परिणति भूकम्प, ~~[illegible]~~, सुनामी, बाढ़-सूखा

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

बाद का फटना इत्यादि रूपो मे होती हैं। प्रकृति की इसी स्थिति के बारे मे में कहा गया है-

" प्रकृति मानव का सबसे बड़ा पोषक होने के साथ-साथ सबसे बडा विनाशक भी हो सकती हैं।"

उपर्युक्त कथन प्रकृति की दो तरफा स्थिति का आकलन करती हैं। जिसके अंतर्गत कहा जा सकता है, कि प्रकृति मनुष्य को इसके विकास एवं समृद्धि के लिए सभी सुविधाऐ उपलब्ध कराकर उसका लालन-पालन करती है। जैसे प्रकृति द्वारा मनुष्य को दी जा रही प्राकृतिक संसाधनो की सुविधा, जल-वायु, मृदा इत्यादि।

वही दूसरी ओर जब मनुष्य अपनी असीमित इच्छाओ को पूरा करने हेतु प्रकृति को नुकसान पहुचाता है और प्रकृति की सहनशीलता की सीमा समाप्त हो जाती तो प्रकृति प्राकृतिक आपदाओ के रूप मे आकर मनुष्य तथा उसके विकास ~~को की~~ का भी विनाश कर देती है।

प्रकृति के समस्त संसाधनो ~~पर~~ सभी का समान अधिकार है, जिनमे मानव भी शामिल है। जैसा कि प्रमुख राजनीतिक रूसो ने कहा है-

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

"प्रकृति की प्रत्येक जीव पर इसके ~~प्रत्ये~~ प्रत्येक प्राणी का समान अधिकार है।"

इसी आधार पर रूसो ने अपने समाजवाद को प्रतिपादित किया। ~~परन्तु~~ ~~मान~~ इसके साथ ही रूसो ने कहा "–

"मनुष्य स्वतंत्र रूप से जन्म लेता है, परन्तु वह सर्वत्र बेड़ियो मे जकड़ा हुआ होता है।"

रूसो ने कहा कि मनुष्य इस प्रकृति मे स्वतंत्र है, परन्तु जब मनुष्य मे सम्पति के प्रति इच्छा, तृष्णा पैदा होती है तो सर्वत्र विभिन्न कारको से आरोपित होता चला जाता है। साथ ही भौतिकवादी और सुखमय जीवन पर ध्यान देता है और प्रकृति को भूल जाता है।

इसी संदर्भ में वर्तमान भौतिकवादी मानव अपने विकास को प्रमुखता देता है। और वह आज अपना विकास कर चन्द्रमा और मंगल पर भी पहुँच गया। उसने अपने जीवन को सरल एवं सुखमय बनाने हेतु बड़ी-बड़ी इमारते बनाई, सड़को का ~~कि~~ विकास किया, रेल्वे लाइने बिछाई, परिवहन-संचार सुविधाओ का विकास किया। इन सभी विकासकार्यो मे मनुष्य ने प्रकृति का दोहन किया, क्योकि मनुष्य के पास इतनी क्षमता नही कि वह

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

प्रकृति का सहयोग लिए बिना अपना विकास कर सके। परन्तु मनुष्य ने इस पर्यावरण का दोहन जिस तरीके से किया है कि उससे भविष्य की पीढ़ी के लिए संकट उत्पन्न हो गया है।

18 वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे हुई औद्योगिक क्रांति ने मनुष्य के जीवन को आनंदमय बनाया परन्तु इस क्रांति के कारण बड़ी मात्रा मे पेड़-पौधो का दोहन हुआ, जीव-जन्तु मारे गये, यहाँ तक कि मनुष्य ने अपने मनोरंजन के लिए शिकार कर जीवो की हत्या की। इस भौतिकवादी मानव ने श्रृंगार के नाम पर जीवो का विनाश किया जैसे हाथीदाँत के लिए बड़ी मात्रा मे हाथी मारे गये।

इस प्रकार मनुष्य पिछली दो शताब्दियों से अधिक समय से प्रकृति का निरन्तर दोहन कर रहा है परन्तु इसके बदले उसे कुछ नही दे रहा अर्थात उसकी स्थिति का आकलन कर उसमे सुधार नही कर रहा है। जिससे प्रकृति अपने वास्तविक स्वरूप को खोती जा रही है।

20 वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे जब प्रकृति ने अपना विनाशक रूप दिखाया अर्थात वैश्विक तापमान मे

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

वृद्धि, सुनामी की पुनरावृत्ति, सूखा-बाढ़ की निरन्तरता, निरन्तर घटते प्राकृतिक साधन इत्यादि तो मनुष्य ने इसकी ओर ध्यान दिया। इसी संदर्भ कई पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुए।

प्रकृति के निरन्तर दोहन के कारण प्रकृति ने अपना भयानक रूप कई माध्यमो से मनुष्य के सम्मुख रखा जैसे- 2001 मे पश्चिमी भारत मे आये भूकम्प ने बड़ी मात्रा मे जन-धन की हानी पहुँचाई, 2004 मे आई सुनामी ने दक्षिण एशिया के साथ-साथ अफ्रीका के पूर्वी किनारो पर अपना खतरनाक रूप दिखाया। 2010-11 के समय जापान मे आई सुनामी, 2013 मे भारत के उत्तराखण्ड मे बादल का फटना, पिछले कुछ वर्षो मे आई चैन्नई, केरल और कश्मीर मे आई बाढ़ ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानव को सचेत कर दिया कि प्रकृति को नजरअंदाज कर विकास नही किया जा सकता बल्कि विनाश को निमंत्रण दिया जा सकता है। ~~यद्यपि~~

~~प्रकृति मनुष्य~~

यद्यपि ~~प्रकृति~~ प्रकृति मनुष्य का पालनकर्ता है वह मनुष्य ~~कि की~~

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

की आवश्यकताओ की पूर्ति करने मे संभव है उसकी तृष्णाओ की नही। जैसा कि महात्मा गांधीजी ने कहा-

"प्रकृति मनुष्य की आवश्यकताओ की पूर्ति कर सकती है, इच्छाओ को नही।"

इस प्रकार बढ़ती प्रकृति की भयावकता को देखते हुए। इसके सुधार हेतु राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सम्मेलन हुए। इनमे सबसे महत्त्वपूर्ण सम्मेलन 1992 मे ब्राजील मे सम्पन्न 'पृथ्वी सम्मेलन' था। जिसमे पहली बार यह स्वीकार किया गया कि प्रकृति की अनदेखी कर विकास संभव नही है। और इस प्रकृति की सुरक्षा इसमे 6 प्रमुख सम्मेलनो का आयोजन कर इसके हित मे कार्य करे जो इस प्रकार-

- जैव-विविधता का संरक्षण हेतु जैव विविधता पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन जो बाध्यकारी है
- बढ़ते जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने हेतु संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन
- बढ़ते मरुस्थलीकरण को सीमित करने हेतु संयुक्त राष्ट्र का मरुस्थल पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

इन सम्मेलनो के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राष्ट्र-अध्यक्षो ने

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पर्यावरण, प्रकृति, जैवविविधता इत्यादि के संरक्षण हेतु नीति-निर्माण किया तथा इससे संम्बद्ध मे ~~संबंधित~~ रोडमैप भी बनाये गये। इसी संदर्भ मे सबसे महत्वपूर्ण जलवायु परिवर्तन पर २१वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन जो पेरिस मे हुआ। इसमे 2050 तक जलवायु परिवर्तन हेतु बढ़ते तापमान को औद्योगिक क्रांति के पूर्व की स्थिति के अनुरूप लाकर विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं को सीमित करने पर बल दिया गया।

इसी प्रकार प्राकृतिक जीव-जन्तु, जैव-विविधता पर कार्टाजेना सम्मेलन, किगाली सम्मेलन प्रमुख है। इसी संदर्भ मे यदि भारत के संदर्भ मे बात करे तो भारत द्वारा लागू जैव-विविधता अधिनियम 2002, पर्यावरण अधिनियम 1986, ~~पर्यावरण~~ जलवायु परिवर्तन के नियंत्रण हेतु अंतर्राष्ट्रीय सोलर संगठन, जीवो के संरक्षण हेतु चलाई जा रही विभिन्न योजना जैसे बाघ संरक्षण योजना, मिशन एलीफेन्ट, एशियाई शेर संरक्षण योजना प्रमुख है। भारत राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुऐ सभी पर्यावरण से संबंधित मुद्दो पर निरन्तर अपनी भूमिका अदा कर रहा। साथ ही भारत पर्यावरण के संरक्षण हेतु अपने-आप को एक

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

नेतृत्वकर्ता के रूप मे प्रस्तुत कर रहा है।

अत: इस प्रकार मनुष्य इस प्रकृति का एक अंग है। यह मनुष्य अपने विकास की अंधी दौड मे प्रकृति को नजरअंदाज कर रहा है तो यह इसकी सबसे बड़ी भूल होगी जिसकी क्षतिपूर्ति करना इसके वश से बाहर होगा। और यह विनाश बिना किसी निमंत्रण के, बिना किसी चेतावनी के आयेगा और मानवीय सभ्यता का विनाश कर देगा।

इस हेतु मनुष्य एवं प्रकृति के बीच जो सुसाध्य संबंध है इसे बनाये रखे क्योंकि मनुष्य के बिना प्रकृति अपना वर्चस्व, अपना अस्तित्व बनाये रख सकेगी, परन्तु मनुष्य प्रकृति के बिना पल भर भी जीवित नही रह सकता। इसलिए निरन्तर मनुष्य को अपने विकास कार्यो को ध्यान मे रखकर प्रकृति को नजर-अंदाज किये बिना अपना विकास करना ~~सकता~~ चाहिए है। इसी संदर्भ मे विकास की एक नई अवधारणा आई है, जिसे 'सतत विकास' कहा जाता है। इसके अंतर्गत मनुष्य अपने विकास कार्यो का इस प्रकार से

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

संचालन करे कि वह वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति तो करे परन्तु भविष्य की पीढ़ी के लिए बचे संसाधनों के साथ किसी भी प्रकार का कोई हस्तक्षेप ना हो। यदि प्रकृति का नजर अंदाज किया तो विनाश निश्चित है। जैसा कि श्रीकृष्ण ने भगवतगीता मे कहा

"जब जब प्रकृति और स्त्री का अपमान होगा तब-तब इस संसार को विनाश का सामना करना पड़ेगा।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–B / SECTION –B

1. युद्ध के लिये तैयार रहना शांति को संरक्षित करने का सबसे प्रभावी उपाय है।

   To be prepared for war is the most effective means of preserving peace.

2. समस्याग्रस्त विश्व के लिये गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता।

   The relevance of Gandhian Ideology in the problem laden world.

3. सामाजिक एवं क्षेत्रीय न्याय की कमज़ोरियाँ संपन्न समाजों के अंतर्विरोधों को प्रत्यक्ष संघर्ष के रूप में प्रस्तुत कर सकती हैं।

   The weaknesses in social and regional justice can bring forward contradictions of affluent societies in form of direct struggle.

4. नैतिकता स्वयं अपना ही पुरस्कार है।

   Morality is its own reward.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

"युद्ध के लिए तैयार रहना शांति को संरक्षित करने का सबसे प्रभावी उपाय है।"

उपर्युक्त कथन अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा शक्ति संतुलन की स्थिति के आधार पर कहा। अंतर्राष्ट्रीय संबंध इसी शक्ति-संतुलन की स्थिति पर टिका हुआ होता है। इसके अंतर्गत सभी राज्य अपनी शक्ति को निरन्तर बढ़ाकर स्वयं को संतुलन की स्थिति मे लाने का प्रयास करते है, ताकि युद्ध की स्थिति आने पर उसका सामना किया जा सकता है। यदि किसी राज्य के पास सैनिक क्षमता, आर्थिक तकनीकी शक्ति है, और वह युद्ध के लिए तैयार है तो शत्रु उससे युद्ध करने का साहस आसानी से नही कर पायेगा और शांति की स्थिति बनी रहेगी। इसके विपरीत यदि एक राज्य कमजोर है, उसकी युद्ध नीति भी कमजोर है, तो शत्रु राज्य अपने वर्चस्व का बनाये रखने हेतु उस पर युद्ध कर देगा या कर सकता है, जिससे अशांति की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इतना ही नही कभी - कभी युद्ध के माध्यम से ही शाँति स्थापित की ~~जाती~~ जाती है, जैसे द्वितीय विश्व युद्ध मे जापान के बढते साम्राज्य ने पूर्वी एशिया सहित सम्पूर्ण विश्व मे अशाँति का वातावरण बनाये हुऐ था उसी समय अमेरिका युद्ध मे शामिल होकर परमाणु बमो के प्रयोग से जापान को धराशायी कर दिया जिसके बाद जापान ने शाँति स्थापित करने के प्रयास किये तथा अपने संविधान के अनुच्छेद - 9 मे युद्ध त्याग की नीति अपनाई जिससे शाँति स्थापित हुई।

इसी संदर्भ मे भगवत गीता मे श्रीकृष्ण ने कहा -

'यदि शाँति स्थापित करने, न्याय और धर्म की स्थापना के लिए यदि युद्ध करना पडे तो युद्ध भी उचित एवं ~~न्यायोचित~~ न्यायोचित होगा। मानव हित के लिए जरूरी होगा।"

इसी आधार पर कृष्ण ने महाभारत के युद्ध मे ~~हुऐ~~ हुऐ विनाश को न्यायोचित बताया।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)
www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

प्राचीन काल के दौरान यदि राज्यो के इतिहास का विश्लेषण करे तो पायेंगे कि प्रत्येक राज्य अपनी युद्ध नीति से शक्ति को निरन्तर बनाये रखता था और जो राज्य शक्तिशाली होता था उसके साथ संधि या समझौता कर उसको मित्र बनाये रखने का प्रयास कर जो कि एक सफल कूटनीतिक राजा/शासक की निशानी है। जैसा कि 'कौटिल्य' ने अपनी पुस्तक 'अर्थशास्त्र' मे कहा -

"सफल शासक वह है जो अपनी कूटनीति से शक्तिशाली शासक को मित्र बनाकर अपने शत्रु को बिना युद्ध के पराजित कर दे।"

इसके अंतर्गत शासक को अपनी कूटनीति समझ से अपनी सैन्य शक्ति को मजबूत कर युद्ध के लिए निरन्तर तैयार रहना चाहिए। कौटिल्य ने अपनी अर्थशास्त्र मे यह कहा कि "यदि शासक/राज्य कमजोर है तो उसे कभी भी अपनी कमजोरी को शत्रु को पता नही लगने देना है अर्थात कमजोर होते हुए भी शत्रु के समक्ष शक्तिशाली दिखो, ताकि शत्रु आप पर आक्रमण ना कर सके और शांति की स्थिति बनाई जा सके।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसी प्रकार वर्तमान आधुनिक ~~राजनीति~~ अंतर्राष्ट्रीय संबंधो मे स्थिति देखने को मिलती है। वर्तमान समय मे प्रत्येक राष्ट्र अपने को निरन्तर शक्तिशाली करने का प्रयास करता है। यदि कोई कमजोर राष्ट्र है तो वह शक्तिशाली राष्ट्र को अपना मित्र बनाकर अपनी शक्ति संतुलन की स्थिति को बनाये रखता है, तथा निरन्तर शाँति बनाये रखने मे कायम रहता है।

यदि ~~शीतयुद्ध~~ द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ~~शीतकालीन~~ शीतयुद्ध की स्थिति का आकलन करे तो इसमे कभी भी किसी भी देश मे युद्ध की स्थिति सामने नही आई। इस दौरान जो कमजोर राज्य था वह शक्तिशाली राज्य के साथ जुड गया। जिसके कारण सीटो, नाटो, वारसा पैक्ट जैसे संगठनो का उदय हुआ।

इस दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ दोनो महाशक्तिशाली राष्ट्र युद्ध के लिए हमेशा तैयार रहे। उन्होने अपनी सैनिक क्षमता ~~बढाई~~ बढाई। परमाणु बमो को बढावा दिया, हाइड्रोजन बम बनाये, विभिन्न राज्यो को अपने - अपने संगठनो मे

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

शामिल किया अपने शक्ति संतुलन को निरंतर बनाये रखा। यही कारण है कि जब 'क्यूबा संकट' (1962) के समय दोनो राष्ट्रो की सेना आमने-सामने आने के बाद भी युद्ध नही हो सका। इसी प्रकार की स्थिति शीत युद्ध के दौर मे कई बार आई। परन्तु दोनो देश युद्ध के लिए तैयार थे इसलिए युद्ध नही हो सका क्योंकि दोनो विनाशक स्थिति से परिचित थे। और शांति स्थापित की।

परन्तु जब 1991 मे सोवियत संघ का विघटन हुआ अमेरिका विश्व की महाशक्ति बना और एकध्रुवीय व्यवस्था कायम हुई और शक्ति संतुलन की स्थिति कायम नही हुई। इसलिए अमेरिका ने अंतर्राष्ट्रीय कानूनो की परवाह किये बिना खाड़ी देशो मे आक्रमण किया और पश्चिमी एशिया के देशो मे अशांति की स्थिति उत्पन्न हुई।

इसके बाद 2001 के बाद जब कई राष्ट्रो ने अपनी शक्ति को बनाया या बडे राज्यो के साथ संगठनो को बनाकर शक्ति - संतुलन की स्थिति को बनाये रखने का प्रयास

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

किया गया। इसी तरह का प्रयास रूस और चीन का वह गठजोड़ है तो अमेरिका भी अपनी शक्तिसंतुलन की स्थिति को कायम रखने हेतु भारत, जापान और आस्ट्रेलिया (QUAD-4) के साथ गठजोड़ बना रहा है।

इस प्रकार वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय संबंध अपनी स्थिति को मजबूत बनाने पर बल दे रहा है। प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितो को बनाने के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है। चीन अपने को महाशक्ति बनाने की दौड़ मे विभिन्न देशों मे सैन्य अड्डे स्थापित कर रहा। व्यापार एवं निवेश को बढ़ाकर उनके आंतरिक मामलो मे हस्तक्षेप कर रहा है। इसको संतुलित करने हेतु भारत भी अपनी विदेश नीति को सक्रिय कर रहा और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने वर्चस्व को बनाने के लिए बल दे रहा है।

कुछ राजनीतिक विचारकों का मानना है कि "तीसरे विश्व युद्ध का ना होने के पीछे प्रमुख कारण है, परमाणु बम का आविष्कार।"

इन विचारकों का मत है कि 1945 मे अमेरिका द्वारा जापान

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

पर गिराये गये परमाणु बमों ने पूरी दुनिया मे यह भय कर दिया कि यदि इनका भविष्य मे प्रयोग होगा तो इस पृथ्वी का विनाश निश्चित है। आज अधिकांश ~~प्रत्येक~~ देशो के पास परमाणु हथियार है, और यदि ~~किसी~~ किन्ही दो देशों मे युद्ध हुआ तो इसका प्रयोग किया जा सकता है, तथा परिणाम भयानक होंगे। इससे दोनो राष्ट्रो का विनाश हो जायेगा।

इस स्थिति मे कोई भी राज्य किसी दूसरे राज्य पर युद्ध करना नही चाहेगा और उसके साथ शांति स्थापित करने का प्रयास करेगा।

अतः इस प्रकार निष्कर्षत कहा जा सकता है कि युद्ध की तैयारियो ने विश्व मे शांति स्थापित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका ~~[illegible]~~ अदा की है। परन्तु साथ ही इन युद्ध की तैयारियो से देशो के मध्य अविश्वास बढ़ा है जिससे संबंधो मे मजबूती नही मिली है। यदि विश्व मे स्थाई शांति की स्थापना करनी है तो अपनी शक्ति को तो कायम रखो परन्तु साथ मे ~~[illegible]~~ सभी राष्ट्र एक दूसरे

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

संबंधो को सुधारने पर जोर दे। साथ साथ आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक विकास को बनावा दे। क्योंकि जब तक राष्ट्रो के मध्य विश्वास, सहयोग सद्भावना नही आयेगी स्थायी शांति स्थापित नही की जा सकती।

अतः इस प्रकार युद्ध के लिए तैयार रहना शांति के लिए एक प्रभावी कदम है परन्तु इसके साथ-साथ हमें अन्य कारको जैसे- अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की स्वायत्तता को बढाये, उनका पुनर्गठित कर उनको लोकतांत्रिक बनाया जाए। विकासशील एवं अल्पविकसित देशो को साथ-साथ लेकर चले तो शांति स्थापित की जा सकती है। साथ है भारत का पंचशील सिद्धान्त इसके लिए प्रभावी कदम हो सकता है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation